ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

भारतीय ज्ञान परंपरा– शैक्षिक परिदृश्य पुर्नगठन

डॉ. अनिता सुखवाल (अधिष्ठाता व सहायक आचार्य), वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग , कोटा विश्वविद्यालय कोटा, राजस्थान 324005
ईमेलः anitasukhwal@uok.ac.in
ललित कुमार (शोधार्थी), वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग कोटा विश्वविद्यालय कोटा, राजस्थान 324005
ईमेलः lalitkumar8741@gmail.com

सारांश :–

भारत में शिक्षा हमेशा से केवल सूचनाएँ याद करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास में मदद करना रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी सोच को आगे बढ़ाने का प्रयास करती है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर जोर देती है, ताकि विद्यार्थी सिर्फ नौकरी पाने तक सीमित न रहें, बल्कि अच्छे संस्कारों, सांस्कृतिक समझ तनाव मुक्त जीवन व वैश्विक सोच से भी समृद्ध हों।

आज जब समाज में तनाव, अवसाद और नैतिक मूल्यों की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा हमें संतुलित और बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकती है। इस शोध पत्र में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समाज, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्या प्रभाव है और मौजूदा शैक्षिक नीति में क्या–क्या समस्याएँ एवं चुनौतियॉ आ सकती है व इसके क्या समाधान प्रयास किए जा रहे है, इस हेतु सोशल मीडिया व समाचार पत्र व प्रकाशित साक्षातकारों की मदद ली गई है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

परिचय :–

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों, ग्रंथो, रामायण, महाभारत, बौद्व और जैन ग्रंथो के अध्ययन पर आधारित रही है। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली मे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन विश्वविद्यालयों ने भारत को अनेकों विद्वान दिये। प्राचीन समय में विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली में अपनी सांस्कृतिक समझ, समाजिक उतरदायित्व, अच्छे संस्कार सभी ग्रहण करते थे वे तनाव व अवसाद मुक्त होकर शिक्षा ग्रहण करते थे परन्तू हम आज के समाज की बात करते है विद्यार्थी तनाव, अवसाद, मानसिक दुर्बलता इत्यादि समस्याओं से जुझ रहें है यही कारण है कि विद्यार्थियों मे सोचने समझने की शक्ति का ह्यस हो रहा है जिस वजह से वे गलत राह पर चलने लग जाते है। इस शोध पत्र मे हम वहीं प्रयास कर रहें है कि कैसे विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोडा जा सकता है व इसके साथ–साथ वर्तमान मे शिक्षा नीति की क्या–क्या खामियां है व इनको कैसें दूर किया जा सकता है। **(**शाक्या – मुखर्जी **2024)** भारत अपनी प्राचीन संस्कृति, सम्रद्वि व ज्ञान परंपराओं को अपना कर वर्तमान में चल रही ब्रिटिश शासन प्रणाली पर काबू पा सकता है।

शोध पद्धति :–

वर्तमान शोध पत्र को लिखने में अखबार, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, प्रकाशित साक्षातकारों व सोशल मीडिया की मदद ली गई है।

साहित्यिक समीक्षा :–

(शर्मा 2024**)**वसुधैव कुटुंबकम के भाव को चरितार्थ कर मूल्य आधारित शिक्षा पर केंद्रित भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक पटल पर मानव उत्थान में शिक्षा की महती भूमिका की परिचायक है। भारत की शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से ही समग्र विकास की अवधारणा पर आधारित रही है, जिसमें ज्ञान केवल सूचनाओं का संग्रह न होकर व्यक्ति के आंतरिक विकास और सामाजिक कल्याण का माध्यम भी रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती है।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में विद्यार्थी कई जटिल समस्याओं– मानसिक तनाव, अवसाद और नैतिक संकट– से जुझ रहा है विद्यार्थी में सोचने समझने की शक्ति का ह्यस हो रहा है आज समाज में शिक्षा को नौकरी पाने एक जरीया बना दिया है विद्यार्थी को यह बताया जाता है कि वह शिक्षा के माध्यम से अच्छी नौकरी पेशा प्राप्त कर सकता है उसे यह बतलाया जाता है उसे उस शिक्षा का चयन करना है जिससे ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाया जा सके उसे परीक्षा मे अधिकतम अंक लाने पर जोर दिया जाता है चाहे वह इसे रटन विद्या से ही प्राप्त करें आज समाज सभी का दृष्टिकोण बन गया है कि आप कि शिक्षा की काबिलियत तभी मानी जाएगी जब तक की आप उसके माध्यम के किसी एक उच्च सरकारी पद प्राप्त न कर लें,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

आज समाज में सरकारी नौकरी पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी जाती है कि विद्यार्थी आगे ऐसी नौकरी पैसा प्राप्त करे जिसमें अधिक से अधिक पैसा कमाएं क्यों की वे इसी आधार पर उसकी शैक्षिक सफलता का आकलन करते हैं। वर्तमान के समय में विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक समझ, ज्ञान परंपरा, सहिष्णुता इत्यादि का भी अभाव है आज हम देखते है आजकल के बच्चों को अतितीव्र गुस्सा आता है वे गुस्से में गलत कदम उठा लेते है इसके उदाहरण हम अखबारों में पढतें है यह सभी विद्यार्थी में आज के मानसिक तनाव, अवसाद अधिकतम अंक का जोर व अपनी ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक समझ के अभाव के परिणाम है आजकल के विद्यार्थी को जब अपनी संस्कृति या किसी ग्रंथ, विद्वान के बारे में पूछा जाता है उन्हें उनके बारे में पता ही नहीं होता है विद्यार्थी सिर्फ अपनी कक्षा से सम्बंधित शिक्षा का ही रटन करता रहता है क्यों की परीक्षा में अधिकतम अंक लाने का दबाव होता है इसलिए आज के वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ाव आवश्यक हो गया है भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्ति को संस्कृति की समझ के साथ उसमें नैतिक गुणों का विकास करती है। **(परिहार – चौहान 2024)** प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म अर्थ का मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था।

भारतीय ज्ञान परंपरा व शिक्षा प्रणाली

(JHA, KANHAIYA**2022)**प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में संस्कृति व संस्कृत मात्र शब्द नही थे अपितू प्रत्येक भारतीय के भाव है भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए व उसके संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में ज्ञान होना परम आवश्यक है अतएव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषावाद को प्रासंगिक बताते हुए शिक्षा क्षेत्र के सभी स्तरों पर संस्कृत को शामिल करने पर जोर दिया है अतः संस्कृत का अध्ययन करते विद्यार्थी न केवल अपने अतीत से गौरवान्वित होगें अपितू भविष्य के प्रति उल्लासित होगें।

(तिवारी 2021**)**भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अदभुत समन्वय है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित होती है जिसमें विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भता और सम्मान जैसे मूल्य सिखाए जाते थे। यह नीति प्री–स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने की दिशा में कार्य कर रही है।

संस्कृत भाषा भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला रही है। संपूर्ण वैदिक साहित्य, महाकाव्य, स्मृतिग्रंथ, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष और अन्य प्राचीन ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं, जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करने में सहायक सिद्ध होते हैं। संस्कृत भाषा न केवल संस्कारों को विकसित करने में सहायक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

है, बल्कि इसका वैज्ञानिक महत्व भी है। 1987 में नासा ने संस्कृत को कंप्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा के रूप में मान्यता दी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह भाषा तार्किक और संरचनात्मक रूप से अत्यंत उन्नत है। वर्तमान में अमेरिका, जर्मनी सहित कई देश संस्कृत भाषा पर शोध कर रहे हैं।

समाज में तेजी से आ रहे बदलावों और भारतीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए शिक्षा प्रणाली को समावेशी बनाना आवश्यक है। आधुनिकता के इस दौर में पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करना महत्वपूर्ण हो गया है। उपनिषदों में भी उल्लेख किया गया है कि यदि मार्गदर्शक स्वयं दृष्टिहीन हो, तो सही दिशा प्राप्त करना कठिन हो जाता है। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ललित कला और संस्कृति को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने का प्रयास कर रहा है।

एनआईओएस ने 'भारतीय ज्ञान परंपरा' (Indian Knowledge Tradition) नामक एक नई स्ट्रीम की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर संस्कृत और हिंदी माध्यम में पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं। इन पाठ्यक्रमों में वेद अध्ययन, संस्कृत व्याकरण, भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य और संस्कृत भाषा जैसे विषय शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, 'मुक्त बेसिक शिक्षा' (OBE) कार्यक्रम के तहत संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में विभिन्न पाठ्यक्रमों और स्व–अध्ययन सामग्रियों का विकास किया गया है। इन पाठ्यक्रमों में रामायण, महाभारत, योग, प्राणायाम, एकाग्रता और स्मृति विकास से संबंधित विषय भी सम्मिलित किए गए हैं।

माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आयुर्वेद, योग, वेदपाठ, न्यायशास्त्र, ज्योतिष, अनुप्रयुक्त संस्कृत व्याकरण और नाट्यकला जैसे सात नए पाठ्यक्रम विकसित किए जा रहे हैं। एनआईओएस ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाने के लिए गुरुकुलों और अन्य संस्थानों से प्रस्ताव भी आमंत्रित किए हैं।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना राष्ट्र की पहचान बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए एनआईओएस ने प्रवासी अध्ययन केंद्र (Centre for Diaspora Studies) की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना और विश्व बंधुत्व की भावना को सशक्त करना है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

1. **वित्तपोषणः** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को लागू करने में मुख्य मुद्दे और कठिनाइयाँ पर्याप्त वित्तपोषण की कमी हैं। हम एनईपी 2020 के क्रियान्वयन में पर्याप्त वित्तपोषण बाधाओं की आशंका करते हैं। कार्यक्रम में कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनके लिए महत्वपूर्ण व्यय की आवश्यकता होगी, जैसे कि नए संस्थानों की स्थापना और पहले से मौजूद संस्थानों का विस्तार। वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए, शिक्षा में सार्वजनिक निधि को सकल घरेलू उत्पाद के 4.6 से बढ़ाकर सकल घरेलू उत्पाद का 6 करने की सुझाई गई नीति एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश करेगी।

2. **शिक्षक प्रशिक्षणः** एनईपी 2020 शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक कौशल वृद्धि के महत्व पर प्रकाश डालता है। फिर भी, भारत का वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण बुनियादी ढांचा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) के एक सर्वेक्षण के अनुसार, देश में केवल 13ः शिक्षकों ने पिछले पाँच वर्षों में इन–सर्विस प्रशिक्षण लिया है। इस संबंध में, एनईपी 2020 की प्रभावशीलता पर्याप्त वित्तीय संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर निर्भर करेगी।

3. **भाषा नीतिः** एनईपी 2020 की भाषा नीति ने विवाद पैदा कर दिया है क्योंकि कई राज्य और आबादी हिंदी या अन्य भाषाओं को शिक्षण के प्राथमिक तरीके के रूप में इस्तेमाल करने का विरोध करती है। भाषा नीति की प्रभावशीलता सभी संबंधित पक्षों की सहयोग करने और आम सहमति तक पहुँचने की इच्छा पर निर्भर करती है। पेपर का तर्क है कि नीति को राष्ट्र की भाषाई विविधता पर विचार करना चाहिए और व्यक्तिगत राज्यों और समूहों की प्राथमिकताओं का सम्मान करना चाहिए।

4. डिजिटल डिवाइडः देश में डिजिटल अंतर की मौजूदगी, जिसमें कई ग्रामीण और कम आय वाली आबादी के पास इंटरनेट कनेक्शन और डिजिटल गैजेट की कमी है, शिक्षा में डिजिटल तकनीक से संबंधित एनईपी 2020 के प्रयासों के सफल क्रियान्वयन में एक बड़ी बाधा प्रस्तुत करता है। इस मामले में नीति की प्रभावशीलता डिजिटल तकनीकों की उपलब्धता में बुनियादी असमानताओं को दूर करने और सभी शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने पर निर्भर करेगी।

5. **प्रत्यायन और गुणवत्ता आश्वासनः** एनईपी 2020 उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है उच्च शिक्षा में मानक और आधिकारिक मान्यता। फिर भी, देश की वर्तमान प्रमाणन प्रणाली अव्यवस्थित है और इसमें स्पष्टता का अभाव है। रणनीति उच्च शिक्षा के लिए एक केंद्रीकृत नियामक निकाय के विकास का सुझाव देती है, लेकिन इस प्रयास की प्रभावशीलता पर्याप्त वित्तीय संसाधनों, बुनियादी ढांचे और राजनीतिक दृढ़ संकल्प पर निर्भर करेगी। इस पहलू में, नीति की प्रभावशीलता नियामक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

निकाय की सभी संस्थानों के बीच निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा प्रदान करने और मान्यता प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने की क्षमता पर निर्भर करेगी।

एनईपी 2020 के कार्यान्वयन की चुनौतियों और समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव

1. **वित्तपोषणः** वित्तपोषण संबंधी कठिनाइयों से निपटने के लिए, सरकार को वैकल्पिक वित्तपोषण स्रोतों, जैसे सार्वजनिक–निजी भागीदारी, परोपकारी वित्तपोषण और रचनात्मक वित्त विधियों की जांच करने पर विचार करना चाहिए। संभावित प्रभाव को अधिकतम करने के लिए, सरकार को अपने बजट आवंटन में शिक्षा को प्राथमिकता देने पर विचार करना चाहिए और अपने खर्च को अनुकूलित करने के तरीकों की जांच करनी चाहिए।

2. **शिक्षक प्रशिक्षणः** शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास की क्षमता को बढ़ाने के लिए, सरकार को प्रशिक्षण केंद्रों, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म और मेंटरशिप कार्यक्रमों सहित शीर्ष–स्तरीय प्रशिक्षण सुविधाओं की स्थापना के लिए संसाधन आवंटित करने चाहिए। सरकार शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होने और अपने ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करने के लिए व्यवसाय और गैर–सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन प्रदान कर सकती है।

3. **भाषा नीतिः** भाषा नीति द्वारा प्रस्तुत कठिनाइयों से निपटने के लिए, सरकार नीतियाँ विकसित करने के लिए अधिक समावेशी और सहयोगात्मक पद्धति का उपयोग कर सकती है, निर्णय लेने की प्रक्रिया में सभी संबंधित पक्षों को शामिल कर सकती है। सरकार को देश में भाषाओं की विविधता को पहचानना और उसका सम्मान करना चाहिए, शिक्षा के लिए भाषा चुनने में लचीलापन प्रदान करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक छात्र को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच मिले।

4. **डिजिटल डिवाइडः** डिजिटल तकनीकों की उपलब्धता में असमानता को दूर करने और निष्पक्षता को बढ़ावा देने के लिए, सरकार को ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में डिजिटल बुनियादी ढांचे की स्थापना के लिए धन आवंटित करना चाहिए। इसमें ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, डिजिटल गैजेट और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म प्रदान करना शामिल होगा। सरकार को शैक्षिक उद्देश्यों के लिए डिजिटल तकनीकों के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों और छात्रों को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करनी चाहिए।

5. **मान्यता और गुणवत्ता आश्वासनः** सरकार उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और मान्यता प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त बजट और संसाधनों के साथ एक स्वायत्त नियामक इकाई स्थापित करेगी। नियामक निकाय के पास मान्यता के लिए स्पष्ट मानदंड और निर्देश स्थापित करने, मदद की जरूरत वाले स्कूलों को तकनीकी सहायता प्रदान करने और अधिकृत संस्थानों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा की क्षमता की लगातार निगरानी और मूल्यांकन करने का अधिकार है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

निष्कर्षः–

एनईपी 2020 के सफल क्रियान्वयन के लिए सरकार, नागरिक समाज और अन्य हितधारकों के लिए निरंतर और सहयोगात्मक तरीके से मिलकर काम करना आवश्यक है। हमें एनईपी 2020 के क्रियान्वयन के मुद्दों और समस्याओं को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए एक सहयोगात्मक और सहभागी रणनीति अपनानी चाहिए। इसके लिए वित्त और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता देना होगा, साथ ही कई अभिनेताओं के ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करना होगा। इस प्रकार ही हम वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कर पाएगें और भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि भवि य की शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार भी है। इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने में विद्यार्थियों को एक समृद्व, संतुलित और संस्कारित शिक्षा प्राप्त होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो भारतीय मूल्यों को संजोते हुए वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाने की ओर बढ रही है। यदि इस पर दिशा में कार्य किया जाए, तो यह संपूर्ण समाज और राष्ट्र के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्व होगा।

Bibliography

Ashraf Azam, Meenakshi Singh, & Ansar Ahmad. **(2024).** Problems, Challenges, And Suggestions For The Implementation of NEP **2020.** *INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)***.**

KANHAIYA JHA. **(25** JAN **2022).** ***शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा की अनिवार्यता.*** www.jagran.com: https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-ncr-the-imperative-of-indian-knowledge-tradition-in-the-education-system-**22412895.**html **से पुनर्प्राप्त**

डॉ शिवाली शाक्या, & **शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी. (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य.** *JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)***.**

डॉ सावित्री परिहार, & **श्रीमती प्रभा चौहान. (2024). प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास.** *International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)*, **4.**

तिवारी, ड. र. (2021). **भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति.** ***राष्ट्रीय शिक्षा.***

शर्मा, ड. ग. (2024). **भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति.** *Ajasraa*.